प्रेस-विज्ञप्ति 29.06.2024

श्री रामजन्म स्थल के उत्खनन से परे तथ्यों एवं श्री राम जन्मभूमि पर कार्य करने के दौरान (आर्चियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के (सेवानिवृत्त) रीजनल डायरेक्टर (नार्थ) एवं) पदमश्री श्री मुहम्मद के.के. जी के वास्तविक अनुभव को जानने हेतु सत्र

पुरातत्वविद् (पदमश्री श्री मोहम्मद के.के., आर्चियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के (सेवानिवृत्त) रीजनल डायरेक्टर (नार्थ) मुहम्मद के.के. जी, जिन्होंने 1976 में मस्जिद के पूर्वी हिस्से में खुदाई करने वाली एएसआई टीम में भाग लेने के बाद अयोध्या में मस्जिद स्थल पर एक मंदिर की उपस्थिति स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी, को मर्चेंट्स चैम्बर ने आज दिनाँक 29 जून 2024 को जूम मीटिंग के माध्यम से सायं 05:00 बजे आमंत्रित किया था।

मर्चेंट्स चैम्बर के अध्यक्ष श्री अभिषेक सिंहानिया जी ने स्वागत-भाषण दिया।

सत्र के संचालक श्री आकाश गोयनका जी थे जिनके एक प्रश्नोत्तरी सत्र के माध्यम से सत्र को आयोजित किया, जिसका विवरण इस प्रकार से है :

अयोध्या में राम जन्म स्थली को श्री जन्मभूमि सिद्ध करने के दौरान आपकी यात्रा, अनुभव क्या रहा..? साथ ही यह भी बताइये की खुदाई के दौरान क्या - क्या प्राप्त हुआ.....? तथा क्या यह ग्रंथों में उल्लिखित है..?

श्री मोहम्मद जी कि वह उस टीम का हिस्सा थे जिसने 1976-77 में अयोध्या (राम मंदिर स्थल) पर प्रथम बार उत्खनन करवाया था। मस्जिद के नीचे एक भव्य मंदिर होने के पर्याप्त मात्रा में पुरातात्विक सबूत हैं। उत्खनन के दो महत्वपूर्ण घटक होते हैं। प्रक्रिया के अनुसार हमने सबसे पहले सतह पर अवशेषों का पता लगाने के लिए सतही अन्वेषण किया। विवादास्पद मस्जिद पुलिस के कब्जे में थी और किसी भी आम आगंतुक को अंदर जाने की अनुमति नहीं थी। लेकिन चूंकि हम खुदाई दल का हिस्सा थे, इसलिए हमें अंदर जाने की अनुमति दी गई।

जब हम अंदर गए तो मैंने मस्जिद के 12 स्तंभ देखे जो मंदिर के अवशेषों से बनाए गए थे। इतिहास पर अगर गौर फरमाएं, तो हम यह जानेंगे कि 12वीं और 13वीं शताब्दी के लगभग सभी मंदिरों में आपको आधार पर 'पूर्ण कलश' मिलता है। यह एक 'घड़ा' (पानी का घड़ा) की संरचना है जिसमें से पत्ते निकल रहे होंगे। यह हिंदू धर्म में समृद्धि का प्रतीक है और इसे 'अष्ट-मंगला चिन्ह' के रूप में जाना जाता है-जो आठ शुभ प्रतीकों में से एक है। लेकिन दूसरी खुदाई में 17 पंक्तियों में 50 से अधिक स्तंभ आधार सामने आये। उत्खनन से यह भी पता चला कि किस आधार पर कई स्तंभ खड़े थे। इसका मतलब है कि यह संरचना भव्य और वृहद थी। खोजी गई संरचना (बाबरी मस्जिद) के नीचे एक मंदिर था और इसका निर्माण 12वीं शताब्दी ई. में हुआ था।

श्री मोहम्मद ने अपनी सम्पूर्ण प्रस्तुति को पावर-पॉइंट के माध्यम से कई फोटोग्राफ्स (उत्खनन के दौरान पाए गए (प्राचीन मूर्तियों के) अवशेषों), संबंधित अखबारों में प्रकाशित साक्षात्कार, ग्रंथों आदि के माध्यम से रखा।

अपने कार्य-शैली के एक अनुभव को साझा करने के दौरान उन्होंने अपने वरिष्ठ अधिकारी से कहा था कि,

"सुदरनम निर्दय श्रेथा - अर्थात- I have done my duty for which death also welcome."

कुछ विचारकों द्वारा यह भ्रान्ति फैलाई गयी कि रामायण व महाभारत केवल धार्मिक पुस्तकें हैं और उन्हें मिथक कहा गया। इस पर आपकी क्या राय है और उनका हमारे देश के इतिहास के रूप में अध्ययन क्यों नहीं किया गया..?

उन्होंने कहा कि जब हम अपने विद्यार्थियों को यह पढ़ाते रहे कि प्रभु श्री राम मंदिर जो कि अयोध्या में था, जो कि हमारे ग्रंथो में भी लिखा हुआ है। इस तरह के पाठ्यक्रम को भारतीय इतिहास से क्यों हटा दिया गया जबकि हम मुगलों के इतिहास को अनवरत पढ़ते रहे। कहीं ना कहीं भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम को संशोधित करने की आवश्यकता है जिससे हमारे विद्यार्थियों को इतिहास का न्याययोचित व वैज्ञानिक तरीके से सिद्ध ज्ञान प्राप्त हो सके।

प्रश्नों की श्रृंखला के दौरान, श्री मोहम्मद ने कई रहस्यमई तथ्यों पर प्रकाश डाला साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जिस तरह से हम मुसलमान भाइयों के लिए मक्का व मदीना है ठीक उसी तरह से हमारे हिंदू भाइयों के लिए मथुरा व ज्ञानव्यापी मंदिर है इसलिए हम सभी को परस्पर प्रेम व सौहार्द की भावना को ध्यान में रखकर स्वतः ही मथुरा व ज्ञानव्यापी मंदिर हमारे हिंदू भाइयों को दे देना चाहिए।

एक सवाल के दौरान श्री मोहम्मद ने सुप्रसिद्ध शायर मौलाना इकबाल को कुछ पंक्तियाँ दोहराई,

"है राम के वजूद पे हिन्दोस्ताँ को नाज़,
अहल-ए-नज़र समझते हैं उस को इमाम-ए-हिंद....

सत्र के एम.ओ.सी. चैम्बर के सचिव महेंद्र मोदी थे व धन्यवाद-ज्ञापन श्री चैम्बर के कौंसिल मेंबर के सदस्य श्री आशीष चौहान ने ज्ञापित किया।

सत्र में मुख्य रूप से मुकुल टंडन, डॉ. अवध दुबे, सुशील शर्मा, डॉ. राजेश मेहरा, शिवांश मेहरा आदि सदस्य उपस्थित रहे।